# महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाता महिला समूह

आजीविका महिला समूह से जुड़ कर महिलाएं धीरे-धीरे आत्मनिर्भर हो रही हैं. गांव और समाज में अपनी भूमिका निभाने का भी प्रयास कर रही हैं. दीदियों की एकजुटता से इतनी ताकत आ गयी है कि अब वो समाज में बदलाव लाने की क्षमता रखती हैं. महिलाओं में जागरूकता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि जो महिलाएं पहले अपने घर से बाहर नहीं निकल पाती थीं, अब वही महिलाएं हाथों में बैनर लेकर अवैध शराब के खिलाफ रैली निकाल रही हैं और लोगों को जागरूक कर रही हैं. गांवों को डिजिटल इंडिया से जोड़ने के लिए उन्हें स्मार्ट फोन दिया गया है, जिसका वो भरपूर लाभ उठा रही हैं. झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी यानी जेएसएलपीएस के माध्यम से स्वरोजगार से जुड़ कर दीदियां अब पैसे भी कमा रही हैं और अपने परिवार को आर्थिक सहयोग भी कर रही हैं.

## जागरूकता बढ़ रही है ग्रामीणों में

ग्रामीण महिलाओं को हाथ धोने से होनेवाले लाभ को बतातीं दीदियां.

दुमका जिले के मसनिया प्रखंड का पाटनपुर गांव. खूटीजोरी पंचायत के अंतर्गत आने वाले इस गांव में स्वच्छता और स्वास्थ्य के प्रति ग्रामीणों को जागरूक करने के उद्देश्य से सखी मंडल की दीदियों ने ग्रामसभा का आयोजन किया. इस ग्रामसभा में सखी मंडल की दीदियों के अलावा सीसी मो. शमीम, सीएफ बसंती देवी, बैंक सखी वीणापानी मुर्मू, बीसी एजेंट जरीना दीदी समेत गांव के कई लोग शामिल हुए. ग्रामसभा को संबोधित करते हुए सीसी मो. शमीम ने सभी दीदियों से स्वच्छ रहने की अपील की. उन्होंने कहा कि सभी दीदियां अपने घर व आसपास को स्वच्छ रखें और घर के सदस्यों की साफ-सफाई पर भी विशेष ध्यान दें. मो. शमीम ने कहा कि जब तक दीदियां खुद से और अपने घर से स्वच्छता की शुरुआत नहीं करेंगी, तब तक पूरे गांव को स्वच्छ कर पाना संभव नहीं है. इसलिए सबसे पहले सभी दीदियों को एकजुट होकर स्वच्छता की ओर ध्यान देना होगा और मिलकर जिम्मेदारियां निभानी होंगी. इसके बाद दीदियों ने मिल कर अपने घर के आस-पास और पूरे गांव में झाड़ू लगाकर सफाई अभियान चलाया. सक्रिय महिला सखी बसंती दीदी ने कहा कि सखी मंडल की दीदियों में धीरे-धीरे बदलाव आ रहा है. अब महिला समूह की दीदियां जागरूक हो रही हैं. पहले इस गांव की दीदियां अपने बच्चों का टीकाकरण कराने के लिए आंगनबाड़ी केंद्र ले जाती थीं और न ही गर्भवती महिलाएं अस्पताल में प्रसव कराने के लिए राजी होती थी, लेकिन सखी मंडल से जुड़ने के बाद सभी दीदियां अपने बच्चों को प्रत्येक महीना टीकाकरण कराने के लिए आंगनबाड़ी केंद्र ले जाती हैं. गर्भवती महिलाएं भी अब प्रसव अस्पताल में ही कराती हैं. दीदियां शिक्षा को लेकर भी काफी जागरूक हुई हैं और अपने बच्चों को हर रोज स्कूल भेज रही हैं. दीदियों ने हैंडवाश से सभी बच्चों को हाथ धुलाया और हर रोज शौच के बाद व खाने से पहले हाथ धोने की सलाह दी. बच्चों को निरोग रहने के लिए हर रोज नहाना और साफ कपड़े पहनना जरूरी है. ग्रामीणों को बताया गया कि पानी उबाल कर पीयें और सोते समय मच्छरदानी का उपयोग करें. कार्यक्रम के अंत में सभी दीदियों और ग्रामीणों ने गांव को स्वच्छ रखने, साफ-सफाई का पूरा ध्यान रखने और अपने बच्चों को शिक्षित करने की शपथ भी ली.

दुतारी हेम्ब्रम

प्रखंड : मसानिया
जिला : दुमका

## पंजाब का आलू बीज लातेहार में बंटा

नेहा कुमारी

प्रखंड : बरवाडीह
जिला : लातेहार

झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी और आजीविका मिशन के तहत लातेहार जिले के बरवाडीह प्रखंड के बीएमएएमयू में आलू का बीज मंगाया गया और 23 रुपये प्रति किलो की दर से किसान दीदियों के बीच वितरण किया गया. कुकरी पोखराज नस्ल के आलू के बीज पंजाब से मंगाये गये हैं. कृषक दीदियों को देने के लिए 50-50 किलोग्राम के चार सौ बोरे आलू मंगाये गये. आलू के बीज की कीमत 23 रुपये प्रति किलो है. उस हिसाब से 400 बोरे आलू का भुगतान चार लाख साठ हजार रुपये किया गया. बता दें कि पिछली बार आलू की बंपर पैदावार से प्रभावित होकर इस बार किसानों ने पंजाब से आलू के बीज मंगाये हैं.

पिछली बार की अपेक्षा इस बार आलू की डिमांड है. समूह से मिले आलू के बीज को अच्छे से जांच-परख कर लगाया जाता है, जिससे आलू की पैदावार में नुकसान नहीं होता है.

सखी मंडल की किसान दीदियों के बीच वितरण के लिए गांव में मंगाया गया आलू का बीज.

## दीदियों ने ली स्वास्थ्य संबंधी जानकारी

पिंकी महतो

प्रखंड : अनगड़ा
जिला : रांची

रांची जिले के अनगड़ा प्रखंड स्थित हेसल गांव के नया टोली आंगनबाड़ी केंद्र में डिजिटल ग्रीन संस्था के द्वारा सखी मंडल की दीदियों को पिको प्रोजेक्टर के माध्यम से स्वास्थ्य संबंधी जानकारी दी गयी. कार्यक्रम में काफी संख्या में सखी मंडल की महिलाएं शामिल हुईं. इस दौरान उन्हें बच्चों के स्वास्थ्य से संबंधित वीडियो दिखाया गया. वीडियो के माध्यम से दीदियों को बताया गया कि मां का दूध बच्चे के लिए कितना जरूरी है. सात माह से लेकर दो साल तक के बच्चों के ऊपरी आहार के बारे में भी बताया गया. वीडियो में दिखाया गया कि बच्चे के जन्म के बाद मां का गाढ़ा पीला दूध बच्चे के लिए काफी लाभदायक होता है, जो बच्चे के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए बेहद जरूरी है. इस दूध को पीने से बच्चों में बीमारियों से लड़ने की क्षमता विकसित होती है. इसके अलावा बच्चों को घर में बना भोजन ही देना चाहिए. वीडियो दिखाने के बाद दिल्ली से आये सदस्यों ने दीदियों से कई सवाल भी पूछे. इस दौरान दीदियों ने कहा कि वीडियो के माध्यम से उन्हें स्वास्थ्य संबंधी कई महत्वपूर्ण जानकारी मिली है. इन जानकारियों को ग्रामीण महिलाओं के बीच साझा करने में काफी सहूलियत होगी.

सखी मंडल की दीदियों को स्वास्थ्य संबंधी जानकारी देतीं महिला विशेषज्ञ.

## दीदियों ने जाना मुर्गी व सूकर पालन के फायदे

पश्चिमी सिंहभूम जिले के तांतनगर प्रखंड के अंगरडीहा पंचायत के अंगरडीहा गांव के स्वयं सहायता समूह की दीदियां हमेशा साप्ताहिक बैठक करती हैं. सखी मंडल की सदस्यों का कहना है कि महिला समूह से जुड़ कर ही उनके जीवन में काफी सुधार हुआ है. उनके परिवार की आर्थिक स्थिति सुधरी है. सूरज समूह की सक्रिय महिला सदस्य सुशीला देवी ने सदस्यों को बैंक लिंकेज के बारे में बताया. उन्होंने कहा कि बैंक लिंकेज के जरिये समूह के खाते में पैसे आये हैं. उन पैसों की निकासी करने की अपील समूह की अध्यक्ष, सचिव और कोषाध्यक्ष से की है. पैसा मिलने के बाद जिस दीदी को पैसों की सबसे ज्यादा जरूरत होगी, उन्हें उनकी जरूरतों के हिसाब से लोन दिया जायेगा. सक्रिय महिला सदस्य सुशीला देवी ने आलू की खेती करने के बारे में चर्चा की और सभी दीदियों को आलू की खेती करने के फायदे भी बताये. सभी दीदियों ने आलू की खेती के फायदे को जाना और आलू की खेती करने की मांग की है. बैठक में बतख पालन पर भी चर्चा हुई. चर्चा के बाद बतख पालन के लिए भी दीदियों ने मंजूरी दी है. इसके साथ-साथ मुर्गीपालन पर भी विस्तार से चर्चा की गयी.

सुशीला देवी

प्रखंड : तांतनगर
जिला : पश्चिमी सिंहभूम

## नशा मुक्ति के लिए दीदियों की जागरूकता रैली

रांची जिले के कांके प्रखंड के चौली उलातू गांव में आजीविका मिशन के अंतर्गत बने स्वयं सहायता समूह की दीदियों ने नशा मुक्ति जागरूकता रैली निकाली. चौली आजीविका महिला ग्राम संगठन की अध्यक्ष सुनीता देवी एवं ग्राम प्रधान देवचंद्र मुंडा की अगुवाई में शराबबंदी के उद्देश्य से नशा मुक्ति जागरूकता रैली का आयोजन किया गया. गांव को आगे बढ़ाना है, शराब बंद करना है, नशा मुक्ति के लिए ग्रामीणों को एकजुट करना है, के नारों के साथ गांव में जागरूकता रैली निकाली गयी. इस दौरान सखी मंडल की दीदियां नारा लगाते हुए पूरे इलाके में गयीं और लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया. रैली के दौरान सखी मंडल की दीदियां शराब बनानेवाले लोगों के घर भी गयीं और उनसे शराब नहीं बनाने की गुजारिश की. उन्हें शराब से होनेवाली बीमारियों और दुष्परिणाम के बारे में भी बताया. महिला ग्राम संगठन की अध्यक्ष सुनीता देवी ने कहा कि लोगों को आजीविका से जोड़कर रोजगार उपलब्ध कराया जायेगा. अब गांव को नशामुक्त करने के लिए अभियान चलाया जा रहा है. इसमें शामिल सखी मंडल की दीदियों ने गांव को नशामुक्त करने का संकल्प लेकर रैली का समापन किया.

प्रीति कुमारी लिंडा

प्रखंड : कांके
जिला : रांची

## स्मार्ट फोन से दीदियां बन रहीं स्मार्ट

लातेहार जिले के बरवाडीह प्रखंड में मुख्यमंत्री सखी मंडल स्मार्ट योजना के तहत 45 स्वयं सहायता समूह के सखी मंडल की दीदियों के बीच स्मार्ट फोन का वितरण किया गया. स्मार्ट फोन वितरण करने से पहले सभी समूहों का रजिस्टर चेक किया गया. अब स्मार्ट फोन के जरिये स्वयं सहायता समूह की दीदियां डिजिटल हो जायेंगी. मौके पर मौजूद सौरभ कुमार ने बताया कि स्मार्ट फोन चलाने के लिए दीदियों को प्रशिक्षण दिया जायेगा. बता दें कि लातेहार में चार हजार महिलाओं के बीच स्मार्ट फोन का वितरण किया गया है. स्मार्ट फोन का वितरण करने के दो दिन बाद सिम कार्ड का वितरण किया गया. सखी मंडल की दीदियों के बीच स्मार्ट फोन का वितरण किया गया. अब स्मार्ट फोन के माध्यम से दीदियां गांव-गांव जाकर ग्रामीणों को सरकारी योजनाओं की जानकारी देंगी. ग्रामीणों की तसवीर सहित उनका पूरा डाटा अपलोड किया जायेगा. दीदियां बताती हैं कि पहले बटन वाले फोन से आसानी होती थी, लेकिन अब स्मार्ट फोन सीखने में समय लग रहा है. सखी मंडल की दीदियों का कहना है कि स्मार्ट फोन का प्रशिक्षण लेने के बाद फोन को चलाने में आसानी होगी.

शबनम खातून

प्रखंड : बरवाडीह
जिला : लातेहार

## सूकर पालन से आत्मनिर्भर हुईं लक्ष्मी

पश्चिमी सिंहभूम जिले के मनोहरपुर प्रखंड के तिरिल गांव की लक्ष्मी देवी सूकर पालन के जरिये अपने परिवार को धीरे-धीरे गरीबी से बाहर निकाल रही हैं. पहले ऐसे हालात नहीं थे. लक्ष्मी देवी की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी. महिला समूह की जानकारी मिलने पर लक्ष्मी गांव में ही संचालित जागो महिला स्वयं सहायता समूह से जुड़ गयीं. समूह से जुड़ने के बाद धीरे-धीरे वह सक्रिय सदस्य बन गयीं. बचत की जानकारी मिलने पर वह भी बचत करने लगीं. उन्हें समूह से लोन लेकर अपना व्यवसाय शुरू करने की भी जानकारी दी गयी. इसके बाद लक्ष्मी दीदी ने समूह से बीस हजार रुपये का लोन लिया और सूकर पालना शुरू किया. उचित देखभाल के कारण आज लक्ष्मी के पास 23 सूकर हैं. एक साल में लक्ष्मी देवी पांच से छह सूकर बेचती हैं. एक सूकर की कीमत कम से कम पांच हजार रुपए है. सूकर पालन कर लक्ष्मी अपने परिवार को गरीबी से बाहर निकालने में अहम भूमिका निभा रही हैं. लक्ष्मी के इस प्रयास से आज जहां उनका परिवार खुश है, वहीं उनके बच्चे अच्छे स्कूल में पढ़ रहे हैं.

आशा तिग्गा

प्रखंड : मनोहरपुर
जिला : पश्चिम सिंहभूम

## आत्मनिर्भर बन रही हैं ग्रामीण महिलाएं

नैपकिन बनातीं मां गायत्री महिला मंडल की दीदियां.

आजीविका मिशन द्वारा संचालित महिला समूह से जुड़ कर किस तरह महिलाएं सबल हो रही हैं और कैसे अपने परिवार को आर्थिक रूप से मजबूत कर रही हैं, इसका नजारा गिरिडीह जिले के बेंगाबाद प्रखंड के सामुदायिक भवन के पास देखा जा सकता है. यहां मां गायत्री महिला मंडल की दीदियां नैपकिन बनाती हैं. आजीविका मिशन महिलाओं के गुण और शौक के आधार पर उन्हें प्रशिक्षण दिला रहा है. महिलाओं को उनकी छिपी प्रतिभा के अनुसार प्रशिक्षण देकर काम दिया जा रहा है. इसका फायदा यह है कि दीदियों को उनके मन-मुताबिक प्रशिक्षण मिल जा रहा है और काम भी. आजीविका मिशन भी इसी तर्ज पर महिला समूह की दीदियों को प्रशिक्षण दे रहा है. इसके पीछे मकसद यह है कि दीदियां अपने हुनर और पसंद के हिसाब से कार्य कर सकें और उन्हें आमदनी भी हो जाये, ताकि पैसों के लिए उन्हें किसी के आगे हाथ फैलाने की जरूरत नहीं पड़े. यही कारण है कि महिलाएं समूह से जुड़ कर जेएसएलपीएस के माध्यम से प्रशिक्षण प्राप्त कर आत्मनिर्भर बन रही हैं. बेंगाबाद प्रखंड की महिलाएं नैपकिन बना कर आत्मनिर्भर बन रही हैं. यहां की महिलाओं में बदलाव दिख रहा है.

अनुशिला हेम्ब्रम

प्रखंड : बेंगाबाद
जिला : गिरिडीह

नैपकिन की जरूरत महिलाओं और किशोरियों को ज्यादा होती है. नैपकिन बनाने के कार्य में जुटी दीदियां बताती हैं कि पहले उन्हें नैपकिन खरीदने के लिए बाजार जाना पड़ता था और जानती भी नहीं थीं कि नैपकिन किस चीज से बनती है, लेकिन अब दीदियां खुद नैपकिन बनाती और बेचती हैं. समूह की दीदियां कहती हैं कि आज आंखें खोल कर दुनिया को देखने की जरूरत है, ताकि हो रहे बदलाव को जान सकें. दीदियों में इस बात की खुशी है कि पहले उन्हें घर से बाहर जाने के लिए या किसी काम के लिए सहारा लेना पड़ता था, लेकिन अब वह दूसरी महिलाओं की मदद कर रही हैं.